कुतुबुद्दीन ऐबक का कार्यकाल

गहड़वालों को तुर्की आक्रमण से सबसे अधिक नुकसान का खतरा था और उन्होंने न तो राजपूतों की कोई सहायता की और न ही तुर्कों को इस क्षेत्रों से बाहर निकालने का कोई प्रयास किया।

मुइज़ुद्दीन 1194 ई० में भारत वापस आया। वह 50,000 घोड़सवारों के साथ यमुना को पार कर कन्नौज की ओर बढ़ा। इटावा जिले में कन्नौज के निकट छंदवाड़ा में मुइज़्ज़ुद्दीन और जयचंद के बीच भीषण लड़ाई हुई। बताया जाता है कि जयचंद्र के भीषण युद्ध में जब जयचन्द्र विजयी हुआ तब उसे एक तीर लगा और तब उसकी मृत्यु हो गयी। उसके मरने के साथ ही सेना के भी पाँव उखड़ गए। अब मुइज़्ज़ुद्दीन बनारस की ओर बढ़ा और उस शहर को तहस नहस (बर्बाद) कर दिया। उसने वहाँ के मन्दिरों को भी नहीं छोड़ा। यद्यपी इस क्षेत्र पर एक भाग पर गहड़वालों का शासन रहा, और कन्नौज जैसे कई गढ़, तुर्कों के विरोध करते रहें तथापि बंगाल की सीमा तक एक ही बड़ा भूभाग उनके कब्जे में आ गया।

- कुतुबुद्दिन ऐबक के छोटे से कार्यकाल में बड़ा जिहाद:

ऐसा बोला जाता है कि कुतुबुद्दिन ऐबक ने अपने छोटे से कार्यकाल में बड़ा जिहाद कर दिया था। अगर यह और सालों तक सत्ता पर आसिन रहता तो, भारत पूरी तरह से मुस्लिमों का देश बन चुका होता। कुछ जगहों पर तो यह भी सबूत मिलते हैं कि कुतुबमिनार, कुतुबुद्दिन ने ही बनवाया था। यहाँ के 27 मन्दिरों को तोड़वाकर एकदम साफ सुथरा करवा दिया था। ताकि कोई पहचान न सके। बाद के समय को खुबशुरत अपना समय बना लिया था।

इस्लाम के अन्दर कहीं भी किसी तरह की मूर्ती नहीं बनाई जा सकती है, जबकी ये लोग चित्रकारी भी नहीं कर सकते हैं। प्रश्न यह उठता है की तब कुतुबमिनार में चित्रकारी किस मुस्लिम राजा ने बनवाई थी। यहाँ तक तो अध्ययनों से ज्ञात हो गया कि, भारत को इस्लाम देश बनाने आया यह गुलाम, देश में कत्लेआम करके गया और हजारों मन्दिरों को तोड़ गया। लेकिन भाग्यवश आज भी इसे हम एक महान शासक के स्वरूप में देखते हैं।

- तुर्क सम्राज्य का संस्थापक के रूप में कुतुबुद्दिन ऐबक:

कुतुबुद्दिन भारत में तुर्क सल्तनत का संस्थापक माना जाता है। उसने भारत में (इस्लामिक साम्प्रदायिक राज्य) की स्थापना की वास्तव में इसी इस्लामिक साम्प्रदायिक राज्य की स्थापना की वाकई रूप के कारण को मद्देनज़र देखते हुए, ऐबक को भारत